International Journal of Advanced Education and Research
ISSN: 2455-5746
Impact Factor: RJIF 5.34
www.alleducationjournal.com
Volume 3; Issue 5; September 2018; Page No. 67-69

छायावादी काव्य परम्परा का उद्भव एवं विकास

डॉ0 कंचनलता सिंह
प्रोफेसर, स्वतंत्र गर्ल्स डिग्री कालेज, लखनऊ विश्वविद्यालय लखनऊ, उत्तर प्रदेश, भारत।

सारांश
छायावाद कव्य ने ही नहीं, समूचे छायावादी काव्य के मूल में अवश्य ही नैतिक विवेक करता दिखाई देता है किन्तु उसकी जड़े बड़ी बारीक और गहरी है। वास्तव में काव्य की सृजन प्रक्रिया में कवि का कृतित्व, काव्य का कार्य विषय और काव्य का प्रभाव–परिणाम नामक तीन तत्व काम करते दिखाई पड़ते है।

मूल शब्द : काव्य शैली, साहित्यिक चेतना, सौन्दर्य बोध, मानवीकरण, राष्ट्रीय चेतना।

प्रस्तावना
हिन्दी साहित्य जगत को व्यापक भावभूमि प्रदान करके छायावाद और इसके कवियों ने छायावाद को आधुनिक काल के प्रमुख काव्य आन्दोलन के रूप में प्रतिष्ठित किया। छायावाद के उद्भव और विकास के क्रम में हमें भी शारदा नामक पत्रिका को रेखांकित करना आवश्यक प्रतीत होता है। 'श्री शारदा' नामक पत्रिका में सन् 1920 ई0 के चार अंकों में पं0 मुकुटधर पाण्डेय ने 'हिन्दी छायावाद' शीर्षक निबन्ध लिखा। उसी शीर्षक से जून सन् 1921 ई0 की 'सरस्वती पत्रिका' में भी सुशील कुमार ने एक व्यंग्यात्मक लेख लिखा। इन निबन्धों से स्पष्ट है कि सन् 1920 ई0 के आस–पास 'छायावाद' नाम हिन्दी में प्रचलित हो गया था और छायावादी काव्य का प्रारम्भ भी सन् 1920 ई0 से पूर्व ही हो चुका होगा।

शोध का उद्देश्य
शोध का उद्देश्य छायावादी काव्य परम्परा के उद्भव एवं उसके विकास का परिलक्षित करके हिन्दी साहित्य इसके अभूतपूर्व योगदान और इस काव्य परम्परा के कालजयी कवियों से परिचित कराना है।

शोध का महत्व
इस शोध का महत्व इस मायने में बहुत अधिक हो जाता है कि छायावादी काव्य की उत्पत्ति एवं उसके विकास ने हिन्दी साहित्य की उस विधा का उजागर करने का प्रयास किया गया है जो उस काल की महत्वपूर्ण रचनायें थीं।

शोध प्रविधि
इस शोध पत्र में छायावादी काव्य की विशिष्टताओं को बड़े ही मार्मिक ढ़ंग से प्रस्तुत किया गया है। इसमें विवरणात्मक, विश्लेषणात्मक और प्रमाणिक प्रविधियों का बड़े ही सुन्दर ढ़ंग से प्रयोग किया गया है।

विवेचना
छायावाद के जन्म के सम्बन्ध में कई मत प्रचलित हैं। आचार्य पं0 रामचन्द्र शुक्ल के विचार से हिन्दी कविता की नई धारा (छायावाद) के प्रवर्तक विशेषतः मैथिलीशरण गुप्त और मुकुटधर पाण्डेय हैं।

"इस प्रकार छायावाद का जन्म सन् 1905 ई0 के लगभग माना जाना चाहिए।" पता नहीं यह 1905 ई0 की तिथि सम्पादकों ने शुक्ल जी के नाम पर कैसे मढ़ दी है जबकि उन्होंने कहीं इस तिथि का उल्लेख अपने इतिहास में नहीं किया है जो भी हो यह भ्रामक है।

सन् 1913–14 ई0 को ही शुक्ल जी हिन्दी की छायावादी रचना की प्रारम्भिक तिथि मानते है। शुक्ल जी के मत को अंशतः स्वीकार करते हुए और अंशतः खण्डन करते हुए पं0 इलाचन्द्र जोशी लिखते है – "छायावाद का प्रारम्भ सन् 1913–14 ई0 से मानना चाहिए। छायावाद के वास्तविक जनक प्रसाद जी है। छायावाद की उत्पत्ति और विकास के सम्बन्ध में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का वक्तव्य एकदम भ्रामक, निर्मूल और मनगढ़ंत है।.....प्रसाद जी अविवादास्पद रूप से हिन्दी के प्रथम छायावादी कवि ठहरते हैं। सन् 1913–14 ई0 के आस–पास 'इन्दु' में प्रतिमास उनकी जिस ढ़ंग की कवितायें निकलती थी, जो बाद में 'कानन कुसुम' के नाम से प्रभावित हुई, वे निश्चित रूप से तत्कालीन हिन्दी काव्य–क्षेत्र में युग–प्रवर्तक की सूचक थीं।"

आचार्य नन्द दुलारे बाजपेई का मत है कि छायावाद का प्रारम्भ सन् 1915 ई0 के आस–पास अवश्य हुआ किन्तु साहित्यिक दृष्टि से छायावादी काव्य शैली का वास्तविक अभ्युदय सन् 1920 ई0 पूर्व सुमित्रानन्दन पंत की 'उच्छवास' नामक रचना से माना जा सकता है।

कला मर्मज्ञ राय कृष्णदास का मत है कि प्रसाद जी ही छायावाद के जनक है। "प्रसाद को मैंने इस कारण लिया है कि वे निर्विवाद रूप से हिन्दी में छायावाद के जनक है। अन्य कोई भी नाम उनके साथ न लिया जा सकता है, न टिक सकता है। "

सुमित्रानन्दन पन्त का मत है कि "मोटे रूप से हम प्रसाद जी को हिन्दी में छायावाद का जनक मान सकते है।" अधिकांशतः विद्वानों का मत है कि छायावाद का प्रारम्भ सन् 1913 से माना जाना चाहिए।

'इन्दु' मासिक से छायावाद का जन्म समझना चाहिए। 'इन्दु' मासिक पत्र जो काशी से प्रकाशित होता था, छायावादी रचनाओं का प्रथम मंच बना। प्रसाद जी के भांजे अंबिका प्रसाद गुप्त इसके सम्पादक थे और इस पत्र के संपादन में स्वयं 'प्रसाद' जी का बड़ा महत्व था। इस पत्रिका के सम्पादकीय प्रायः प्रसाद जी ही लिखते

थे। उन्हीं संपादकीय, लेखों, टिप्पणियों से प्रसाद जी की प्रारम्भिक, साहित्यिक विचारधारा का परिचय मिलता है। नई कविता (छायावाद) विषय में प्रसाद जी कथन है कि –

1. साहित्य का कोई लक्ष्य नहीं होता।
2. साहित्य के लिए कोई विधि या बंधन नहीं है।
3. साहित्य में सबसे महत्वपूर्ण है साहित्यकार या कवि का व्यक्तित्व।
4. साहित्य के विषय हैं सत्य और सुन्दर।
5. पाश्चात्य साहित्य और शिक्षा ने कविता के विषय में लोगों के मानदण्ड बदल दिये हैं। अब नये मानदण्डों के अनुरूप ही कविता होनी चाहिए।
6. रीति–काव्य ने जनता की मनोवृत्तियों को निश्चित कर दिया है। अतः नये काव्य के लिए रीति–काव्य का अनुकरण ठीक नहीं।
7. नई कविता के ये गुण हैं –
   क. भावमयता
   ख. आत्मविस्मरणता
   ग. संगीतमयता
   घ. आह्लादकता
   ड़. शांतिमयता।

वास्तव में छायावाद–रोमांस काव्यधारा का आरम्भ इन्हीं वक्तव्यों से मानना होगा। सन् 1913 ई0 की तिथि छायावाद के प्रारम्भ के लिए एक प्रकार से सर्वमान्य है। आचार्य नन्द दुलारे बाजपेयी ने भी इसे प्राकान्तर से स्वीकार किया है।

छायावाद स्वयं अपने में कोई दार्शनिक मान्यता नहीं है। वह तो एक व्यापक मानववादी साहित्यिक चेतना है जो जीवन–जगत की जड़ता के विरूद्ध व्यक्ति स्वाधीनता, आत्मनिष्ठिता एवं भाववादिता के मूल्यों में प्रतिष्ठापना करती है। वह केवल वाद नहीं एक जीवन–दृष्टि है।

छायावाद की परिभाषा देते हुए डॉ0 धीरेन्द्र, भारती, ब्रजेश्वर वर्मा और रघुवंश कहते है – 'छायावाद आधुनिक कविता की उस धारा का नाम है जो सन् 1918 ई0 के आस–पास द्विवेदी युगीन, नीरस, उपदेशात्मक, इतिवृत्तात्मक और स्थूल आदर्शवादी काव्यधारा के बीच से प्रमुखतः रीतिकालीन काव्य–प्रवृत्तियों के विरूद्ध विद्रोह के रूप में प्रवाहित हुई।'

प्रो0 शम्भूनाथ सिंह के विचार उद्धृत कर रहे हैं। छायावाद आधुनिक हिन्दी–कविता के स्वाभाविक विकास की एक महत्वपूर्ण मंजिल है जहाँ पहुँचकर हिन्दी कविता भक्तिकालीन काव्य की ऊँचाई और गौरव को पुनः प्राप्त कर सकी है।

छायावाद के समर्थ आलोचक आचार्य बाजपेई ने छायावाद की सबसे पुष्ट, सम्पूर्ण एवं रोचक व्याख्या की है। वे छायावाद को रहस्यवाद अथवा आध्यात्मिक काव्य से भिन्न मानते है। उनमें मतानुसार नयी छायावादी काव्यधारा का भी एक आध्यात्मिक पक्ष है किन्तु उसकी मुख्य प्रेरणा धार्मिक न होकर मानवीय और सांस्कृतिक है।

छायावादी काव्य प्राकृतिक सौन्दर्य और सामाजिक जीवन–परिस्थितियों से ही मुख्यतः अनुप्राणित है। छायावाद मानव–जीवन–सौन्दर्य और प्रकृति को आत्मा का अभिन्न रूप मानता है।

छायावाद, रहस्यवाद, आध्यात्मवाद, स्वछंदतावाद, मानवतावाद, राष्ट्रीयता एवं सूक्ष्म सौन्दर्यबोध आदि विविध प्रवृत्तियों का समग्र रूप है। डॉ0 नगेन्द्र का छायावाद सम्बन्धी मत जो प्रचलित है छायावादी स्थूल के विरूद्ध सूक्ष्म का विद्रोह है। यह कथन सुनने में रसरंग और ध्वनिपूर्ण अवश्य लगता है। पढ़ने में सूत्रवत् भी जान पड़ता है, परन्तु विचार करने पर यह अस्पष्ट लगता है। प्रश्न उठता है स्थूल कौन है? पहाड़, नदी, जगत, सम्पूर्ण सृष्टि सब कुछ तो स्थूल ही है। जो कुछ भी आंखों से देखा जाता है वह सब स्थूल ही है और सूक्ष्म वह भी ब्रह्मा, आत्मा, ज्ञान चिंतन तक विस्तृत है। फिर सामान्य पाठक इस पहेली को कैसे समझ लें? उनका छायावाद किस स्थूल के विरूद्ध किस सूक्ष्म का काव्य विद्रोह है और क्यों?

डॉ0 हरी प्रसाद द्विवेदी ने छायावादी प्रवृत्तियों पर कुछ विस्तार से प्रकाश डाला है –

अ. 1. जिनमें मानवतावादी दृष्टि की प्रधानता थी।
2. जो व्यक्त विषय को कवि की व्यक्तिगत् चिंता और अनुभूति के रंग में रंग
3. कर अभिव्यक्त करती थी।
4. जिनमें मानवीय आचारों, क्रियाओं, चेष्टाओं और विश्वासों के बदले हुए
5. अलंकारों एवं मूल्यों को अंगीकार करने की प्रवृत्ति थी।
6. जिनमें छंद, रस, ताल, तुक आदि सभी विषयों में गतानुगतिवता से बचने का प्रश्न था और जिनमें शास्त्रीय रूढ़ियों के प्रति कोई आस्था नहीं दिखाई गयी थी।

ब. दूसरी महत्वपूर्ण बात जो यह है कि छायावाद एक महत्वपूर्ण उन्नयन का परिमाण था। यद्यपि उसमें नवींन शिक्षा के परिणाम था। कवियों की भीतरी व्याकुलता से ही नवींन भाषा शैली में अपने को अभिव्यक्ति किया है।

स. सभी उल्लेखनीय कवियों में थोड़ी बहुत आध्यात्मिक अभिव्यक्त की व्याकुलता थी।

हिन्दी साहित्य युग और प्रवृत्तियों में प्रो0 शिव कुमार शर्मा और डॉ0 गणपति चंद्र गुप्त ने छायावाद की विशेषतायें विस्तार से बताई हैं। इन विशेषताओं वे छायावाद काव्य की प्रायः अधिकांश भूमिकायें स्पष्ट हो गयी है। लेखक द्वय के मत से छायावादी काव्य में –

क. छायावाद में आध्यात्मिकता होती है।
ख. यह एक पद्धति विशेष है।
ग. छायावाद प्रकृति में मानवीकरण है।
घ. छायावाद में एक दार्शनिक अनुभूति है।
ड़. यह एक भावात्मक दृष्टिकोण है।
च. यह स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह है।
छ. यह एक गीति–काव्य है। जिसमें प्रेम और सौन्दर्य का अंकन होता है।
ज. इसमें युगानुरूप वेदना की निवृत्ति होती है और यह एक सांस्कृतिक चेतना का परिणाम है।
झ. यह थोथी नैतिकता, रूढ़िवाद और सामंती साम्राज्यवादी बंधनों के प्रति विद्रोह है।
ण. इसका मूलाधार सर्वात्मवाद है।

उपर्युक्त को और अधिक स्पष्ट करते हुए लेखक द्वय ने बताया है कि भारतीय काव्य परम्परा में हिन्दी कविता की छायावादी धारा अपने पूर्ववर्ती युग की प्रतिक्रिया में प्रस्फुटित एक विशेष भावात्मक दृष्टिकोण, एक विशेष दार्शनिक अनुभूति और एक विशेष शैली है। जिसमें लौकिक प्रेम के माध्यम से अलौकिक प्रेम के ब्याज से लौकिक अनुभूतियों का चित्रण है, जिसमें प्रकृति का मानवीकरण है। वेदना की निवृत्ति, सौन्दर्य चित्रण है, गीत तत्वों की प्रमुखता है और जिसके व्यक्तिवाद के स्व में सर्व सम्मिलित है।

प्रसाद जी के प्रारम्भिक काव्य के सम्बन्ध में आचार्य बाजपेयी का मत भी पठनीय है। 'नवींन युग की हिन्दी बृहत्तत्रयी के रूप में श्री जयशंकर प्रसाद, श्री सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' और सुमित्रानन्दन पन्त की प्रतिष्ठा मानी जाती है।.....इनमें भी ऐतिहासिक दृष्टि से

जयशंकर प्रसाद का कार्य सबसे अधिक विशेषता समन्वित है। उन्होंने कविता को सबसे प्रथम रसमय बनाया। कल्पना और सौन्दर्य के नये स्पर्श अनुभव कराये। उनके पूर्व के हिन्दी कवि, प्राचीन श्रृंगारी कवियों से इतने भयभीत हो गये थे कि वे उसे स्पर्श करने में ही संकोच मानने लगे थे। काव्य में मधुर भावों का प्रवेश सशंक दृष्टि से देखा जा रहा था।'

निष्कर्ष

छायावाद का प्रदुर्भाव तत्कालीन युग की राष्ट्रीय चेतना एवं सांस्कृतिक पुनरूत्थान की महती आवश्यकता स्वरूप हुआ। अंग्रेजी साहित्य के अध्ययन देश में घटित परिवर्तन, प्रेम के बदलते हुए स्वरूप और रस के प्रति आसक्ति ने छायावादी रचनाओं को बढ़ावा दिया। छायावादी काव्य प्राकृतिक सौन्दर्य और सामाजिक जीवन की परिस्थितियों से ही मुख्यतः अनुप्राणित है। छायावादी नवींन मर्यादाओं के प्रति सचेत है। उसकी मूल धारा एक महान साहित्यिक आयोजन है। छायावादी काव्य सृजन में प्राचीन और नवींन को मानव–मूल्यों की तुला पर परखा गया है। जीवन के ग्राह्य तत्वों का भाव प्रेरक संश्लेषण भी छायावाद में दर्शनीय है। भोग और श्रृंगार के उज्ज्वल पक्ष काम का विराट स्वरूप, प्रेम की मधुर वीणा और कोमलता की मीठी टीस से छायावाद प्राणवान बन गया है। किन्तु अज्ञात प्रियतम् अति प्रतीकवादी अभिव्यंजना प्रणाली और लुक–छिप कर मन की तरलता को प्रकट करने की अभिलाषा ने छायावादी काव्य को यत्र–तत्र दुरूह, अस्पष्ट और बोझिल बना दिया है। द्विवेदी युगीन काव्य बालक की खिलखिलाहट है और छायावादी साहित्य षोडशी की मृदु मुस्कान। छायावादी काव्य नागरिक जीवन की आदर्शमयी अभिव्यक्ति है और द्विवेदी युगीन काव्य ललित ग्रामीण चित्र।

संदर्भ ग्रन्थ

1. डॉ0 रामरतन भटनागर – प्रसाद साहित्य और समीक्षा
2. इंदु कला – किरण, श्रावण शुक्ल
3. कानन कुसुम
4. जयशंकर प्रसाद – निवेदन, झरना
5. जयशंकर प्रसाद – समर्पण, झरना
6. आचार्य परशुराम चतुर्वेदी – हिन्दी काव्यधारा में प्रेम प्रवाह
7. महाराणा का महत्व
8. वही
9. आचार्य नन्द दुलारे बाजपेयी – जयशंकर प्रसाद
10. प्रेम पथिक
11. आचार्य नन्द दुलारे बाजपेयी – आधुनिक साहित्य
12. महावीर प्रसाद द्विवेदी – जन्मभूमि
13. प्रो0 शिवकुमार शर्मा एवं डॉ0 गणपति चन्द्र गुप्त – हिन्दी साहित्य–युग और प्रवृत्तियां
14. डॉ0 हजारी प्रसाद द्विवेदी – हिन्दी साहित्य उद्भव और विकास
15. आचार्य रामचंद्र शुक्ल – हिन्दी साहित्य का इतिहास
16. हिन्दी साहित्य कोश
17. डॉ0 शम्भूनाथ सिंह – अवंतिका
18. डॉ0 क्षेम – छायावाद के गौरव चिन्ह
19. रामकृष्ण दास – अवंतिका
20. हिन्दी साहित्य कोश – छायावाद युग